

قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

آلہ

पारा - 1

eParah

رُكُوعُهَا: 1

1 سُورَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ 5

آيَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ	لِلَّهِ	رَبِّ	الْعَالَمِينَ ②
सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जो रब है	तमाम जहानों का
الرَّحْمَنِ	الرَّحِيمِ ③	مَلِكِ	يَوْمِ
बहुत महरबान है	निहायत रहम करने वाला है	मालिक है	दिन का
الدِّينِ ④	إِيَّاكَ	نَعْبُدُ	وَ
बदले के	सिर्फ तेरी ही	हम इबादत करते हैं	और
إِيَّاكَ	نَسْتَعِينُ ⑤	إِهْدِنَا	
सिर्फ तेरी ही	हम मदद चाहते हैं	हिदायत दे हमें	
الصِّرَاطِ	الْمُسْتَقِيمِ ⑥	صِرَاطِ	
रास्ते	सीधे की	रास्ता	
الَّذِينَ	أَنْعَمْتَ	عَلَيْهِمْ ⑦	
उनका	इनआम किया तूने	जिन पर	
غَيْرِ	الْبَغْضَوْبِ	عَلَيْهِمْ ⑧	
ना	उनका जो ग़ज़ब किया गया	जिन पर	
وَ	لَا	الضَّالِّينَ ⑨	
और	ना	उनका जो गुमराह हैं	

آياتها: 286

سورة البقرة مدنية 87

رُكُوعَاتُهَا: 40

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْم ١	ذَلِكَ	الْكِتَابُ	لَا	رَيْبَ ٢	فِيهِ ٣	هُدًى	لِّلْمُتَّقِينَ ٤
الْم	ये	किताब	नहीं	कोई शक	इसमें	हिदायत है	मुत्तकी लोगों के लिए
الَّذِينَ	يُؤْمِنُونَ	بِالْغَيْبِ	وَيُقِيمُونَ	الصَّلَاةَ	وَمِمَّا		
वो जो	ईमान लाते हैं	ग़ैब पर	और वो कायम करते हैं	नमाज़	और उससे जो		
رَزَقْنَاهُمْ	يُنْفِقُونَ ٥	وَالَّذِينَ	يُؤْمِنُونَ	بِمَا	أُنْزِلَ		
रिज़क दिया हमने उन्हें	वो खर्च करते हैं	और वो जो	ईमान लाते हैं	उस पर जो	नाज़िल किया गया		
إِلَيْكَ	وَمَا	أُنْزِلَ	مِنْ قَبْلِكَ ٦	وَبِالْآخِرَةِ	هُمْ		
तरफ़ आपके	और जो	नाज़िल किया गया	आप से पहले	और आखिरत पर	वो		
يُوقِنُونَ ٧	أُولَئِكَ	عَلَى هُدًى	مِّن رَّبِّهِمْ ٨	وَأُولَئِكَ			
यकीन रखते हैं	यही लोग हैं	हिदायत पर	अपने रब की तरफ़ से	और यही लोग हैं			
هُمْ	الْمُفْلِحُونَ ٩	إِنَّ	الَّذِينَ	كَفَرُوا	سَوَاءٌ	عَلَيْهِمْ	
वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	बराबर है	उन पर	
ءَاذَنَّا لَهُمْ	أَمْ	لَمْ	تُنْذِرْهُمْ	لَا يُؤْمِنُونَ ١٠	خَتَمَ		
इत्बाह डराएँ आप उन्हें	या	ना	आप डराएँ उन्हें	नहीं वो ईमान लाएँगे	मोहर लगा दी		
اللَّهُ	عَلَى	قُلُوبِهِمْ	وَعَلَى	سَمْعِهِمْ ١١	وَعَلَى	أَبْصَارِهِمْ	
अल्लाह ने	ऊपर	उनके दिलों के	और ऊपर	उनके कानों के	और ऊपर	उनकी आंखों के	
غَشَاوَةٌ ١٢	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	عَظِيمٌ ١٣	وَمِنَ النَّاسِ	مَنْ		
पर्दा है	और उनके लिए	अज़ाब है	बहुत बड़ा	और बाज़ लोग हैं	जो		

يَقُولُ	أَمَّا	بِاللَّهِ	وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ	وَمَا	هُمْ	بِمُؤْمِنِينَ ⑧
कहते हैं	ईमान लाए हम	अल्लाह पर	और आखिरी दिन पर	और नहीं	वो	ईमान लाने वाले
يُخَدِّعُونَ	اللَّهُ	وَالَّذِينَ	أَمَنُوا	وَمَا	يَخْدَعُونَ	إِلَّا
वो धोखा देते हैं	अल्लाह को	और उनको जो	ईमान लाए	और नहीं	वो धोखा देते	मगर
أَنفُسَهُمْ	وَمَا	يَشْعُرُونَ ⑨	فِي قُلُوبِهِمْ	مَرَضٌ ⑩	فَزَادَهُمْ	
अपने नफ़्सों को	और नहीं	वो शऊर रखते	उनके दिलों में	मर्ज़ है	तो ज़्यादा कर दिया उन्हें	
اللَّهُ	مَرَضًا	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	أَلِيمٌ ⑪	بِمَا	كَانُوا
अल्लाह ने	मर्ज़ में	और उनके लिए	अज़ाब है	अलमनाक/दर्दनाक	बवजह उसके जो	थे वो
يَكْذِبُونَ ⑩	وَإِذَا	قِيلَ لَهُمْ	لَا تُفْسِدُوا	فِي الْأَرْضِ ⑪		
वो झूठ बोलते	और जब	कहा जाता है	उन्हें	ना तुम फ़साद करो	ज़मीन में	
قَالُوا	إِنَّمَا	نَحْنُ	مُصْلِحُونَ ⑪	إِلَّا	إِنَّهُمْ	هُمْ
वो कहते हैं	बेशक	हम तो	इस्लाह करने वाले हैं	ख़बरदार	बेशक वो	वो ही
الْمُفْسِدُونَ	وَلَكِنْ	لَا يَشْعُرُونَ ⑫	وَإِذَا	قِيلَ لَهُمْ		
फ़साद करने वाले हैं	और लेकिन	नहीं वो शऊर रखते	और जब	कहा जाता है	उन्हें	
أَمِنُوا	كَبَّ	أَمِنْ	النَّاسُ	قَالُوا	أَتُؤْمِنُ	كَبَّ
ईमान ले आओ	जैसा कि	ईमान लाए	लोग	वो कहते हैं	क्या हम ईमान लाएँ	जैसा कि
أَمِنْ	السُّفَهَاءُ ⑬	إِلَّا	إِنَّهُمْ	هُمْ	السُّفَهَاءُ	وَلَكِنْ
ईमान लाए	बेवकूफ़	ख़बरदार	बेशक वो	वो ही	बेवकूफ़ हैं	और लेकिन
لَا يَعْلَمُونَ ⑬	وَإِذَا	لَقُوا	الَّذِينَ	أَمِنُوا	قَالُوا	
नहीं वो इल्म रखते	और जब	वो मुलाक़ात करते हैं	उनसे जो	ईमान लाए	वो कहते हैं	

أَمَنَّا ^ط	وَإِذَا	خَلَوْا	إِلَى	شَيْطَانِهِمْ ^{لا}	قَالُوا	إِنَّا
ईमान लाए हम	और जब	वो अकेले होते हैं	तरफ़	अपने शैतानों के	वो कहते हैं	बेशक हम
مَعَكُمْ ^{لا}	إِنَّمَا	نَحْنُ	مُسْتَهْزِءُونَ ¹⁴	اللَّهُ	يَسْتَهْزِئُ	
तुम्हारे साथ हैं	बेशक	हम तो	मज़ाक उड़ाने वाले हैं	अल्लाह	मज़ाक उड़ाता है	
بِهِمْ	وَيَدُّهُمْ	فِي طُغْيَانِهِمْ	يَعْمَهُونَ ¹⁵	أُولَئِكَ	الَّذِينَ	
उनका	और ढील देता है उन्हें	उनकी सरकशी में	वो भटकते फिरते हैं	यही लोग हैं	जिन्होंने	
اشْتَرَوْا	الضَّلَالَةَ	بِالْهُدَى ^ص	فَمَا	رَبِحَتْ	تِجَارَتُهُمْ	وَمَا كَانُوا
ख़रीद ली	गुमराही	बदले हिदायत के	तो ना	फ़ायदेमंद हुई	तिजारात उनकी	और ना थे वो
مُهْتَدِينَ ¹⁶	مَثَلُهُمْ	كَثَلِ	الَّذِي	اسْتَوْقَدَ	نَارًا	
हिदायत पाने वाले	मिसाल उनकी	जैसे मिसाल	उसकी जिसने	जलाई	आग	
فَلَبَّأَ	أَضَاءَتْ	مَاحَوْلَهُ	ذَهَبَ	اللَّهُ	بِنُورِهِمْ	وَتَرَكَهُمْ
फिर जब	उसने रोशन कर दिया	माहील उसका	ले गया	अल्लाह	नूर उनका	और छोड़ दिया उन्हें
فِي ظُلُمَاتٍ	لَّا يُبْصِرُونَ ¹⁷	صُمٌّ	بُكْمٌ	عُمًى	فَهُمْ	
अंधेरी में	नहीं वो देख पाते	बहरे हैं	गूंगे हैं	अंधे हैं	पस वो	
لَا يَرْجِعُونَ ¹⁸	أَوْ	كَصِيبٍ	مِّنَ السَّمَاءِ	فِيهِ	ظُلُمَاتٌ	
नहीं वो लौटते	या	जैसे ज़ोरदार बारिश	आसमान से	उसमें	अंधेरे	
وَرَعْدٌ	وَبَرْقٌ ^ج	يَجْعَلُونَ	أَصَابِعَهُمْ	فِي آذَانِهِمْ		
और गरज	और बिजली है	वो डाल लेते हैं	उंगलियां अपनी	अपने कानों में		
مِّنَ الصَّوَاعِقِ	حَذَرٌ	الْمَوْتِ ^ط	وَاللَّهُ	مُحِيطٌ	بِالْكَافِرِينَ ¹⁹	
बिजली के कड़ाकों से	बचने के लिए	मौत से	और अल्लाह	घेरने वाला है	काफ़िरों को	

يَكَادُ	الْبَرْقُ	يَخْطِفُ	أَبْصَارَهُمْ ^ط	كَلْبًا	اضَاءَ	لَهُمْ
करीब है	बिजली की चमक	कि वो उचक ले	निगाहें उनकी	जब कभी	उसने रोशनी की	उनके लिए
مَشَوْا	فِيهِ ^ل	وَإِذَا	أَظْلَمَ	عَلَيْهِمْ	قَامُوا ^ط	وَلَوْ شَاءَ
वो चल पड़ते हैं	उस में	और जब	उसने अंधेरा किया	उन पर	वो खड़े हो जाते हैं	और अगर चाहे
اللَّهُ	لَذَهَبَ	بِسَمْعِهِمْ	وَأَبْصَارِهِمْ ^ط	إِنَّ	اللَّهُ	عَلَى كُلِّ
अल्लाह	ज़रूर ले जाए	कान उनके	और आंखें उनकी	बेशक	अल्लाह	ऊपर हर
شَيْءٍ	قَدِيرٌ ^{ع 20}	يَا أَيُّهَا	النَّاسُ	اعْبُدُوا	رَبَّكُمْ	الَّذِي
चीज़ के	बहुत कुदरत रखने वाला है	ऐ	लोगो	इबादत करो	अपने रब की	जिसने
خَلَقَكُمْ	وَالَّذِينَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	لَعَلَّكُمْ	تَتَّقُونَ ^{ل 21}	الَّذِي	جَعَلَ
पैदा किया तुम्हें	और उन्हें जो	तुमसे पहले थे	ताकि तुम	बच जाओ	वो जिसने	बनाया
لَكُمْ	الْأَرْضَ	فِرَاشًا	وَالسَّمَاءَ	بِنَاءٍ ^ص	وَأَنْزَلَ	مِنَ السَّمَاءِ
तुम्हारे लिए	ज़मीन को	फर्श	और आसमान को	छत	और उसने उतारा	आसमान से
مَاءٍ	فَاخْرَجَ	بِهِ	مِنَ الشَّجَرِ	رِزْقًا	لَكُمْ ^ج	فَلَا تَجْعَلُوا
पानी	फिर उसने निकाला	साथ उसके	फलों से	रिज़क	तुम्हारे लिए	पस ना तुम बनाओ
لِلَّهِ	أَنْدَادًا	وَأَنْتُمْ	تَعْلَمُونَ ²²	وَإِنْ	كُنْتُمْ	فِي رَيْبٍ
अल्लाह के लिए	शरीक	हालांकि तुम	जानते हो	और अगर	हो तुम	किसी शक में
مِمَّا	نَزَّلْنَا	عَلَى عَبْدِنَا	فَاتُوا	بِسُورَةٍ	مِّنْ مِّثْلِهِ ^ص	وَادْعُوا
उससे जो	नाज़िल किया हमने	अपने बंदे पर	पस ले आओ	कोई सूरत	इस जैसी	और बुला लो
شُهَدَاءَكُمْ	مِّنْ دُونِ	اللَّهِ	إِنْ	كُنْتُمْ	صِدِّقِينَ ²³	فَإِنْ
अपने गवाहों को	सिवाए	अल्लाह के	अगर	हो तुम	सच्चे	फिर अगर

لَمْ	تَفْعَلُوا	وَلَنْ	تَفْعَلُوا	فَاتَّقُوا	النَّارَ	الَّتِي	وَقُودُهَا
ना	तुम कर सको	और हरगिज़ नहीं	तुम कर सकोगे	पस डरो	उस आग से	वो जो	ईंधन हैं उसका
النَّاسُ	وَالْحِجَارَةُ ^ط	أُعِدَّتْ	لِلْكَافِرِينَ ²⁴	وَبَشِّرِ	الَّذِينَ		
इंसान	और पत्थर	तैयार की गई है	काफ़िरों के लिए	और खुशख़बरी दीजिए	उन्हें जो		
أَمِنُوا	وَعَمِلُوا	الصَّالِحَاتِ	أَنَّ	لَهُمْ	جَنَّتْ	تَجْرِي	
ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	बेशक	उनके लिए	बागात हैं	बहती हैं	
مِنْ تَحْتِهَا	الْأَنْهَارُ ^ط	كُلَّمَا	رُزِقُوا	مِنْهَا	مِنْ ثَمَرَةٍ		
उनके नीचे से	नहरें	जब कभी	वो दिए जाएंगे	उससे	कोई फल		
رَزَقًا ^ط	قَالُوا	هَذَا	الَّذِي	رَزَقْنَا	مِنْ قَبْلُ ^ط	وَأَتُوا	
बतौर रिज़क	वो कहेंगे	ये	वो ही है जो	दिए गए हम	इससे पहले	और वो दिए जाएंगे	
بِهِ	مُتَشَابِهًا ^ط	وَلَهُمْ	فِيهَا	أَزْوَاجٌ	مُّطَهَّرَةٌ ^ط	وَهُمْ	
उससे	मिलता-जुलता	और उनके लिए	उनमें	बीवियां होंगी	निहायत पाकीज़ा	और वो	
فِيهَا	خَالِدُونَ ²⁵	إِنَّ	اللَّهَ	لَا يَسْتَحْيَ	أَنْ	يَضْرِبَ	مَثَلًا
उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	बेशक	अल्लाह	नहीं हया फ़रमाता/शर्माता	कि	वो बयान करे	कोई मिसाल
مَا	بَعُوضَةً	فَبَا	فَوْقَهَا ^ط	فَأَمَّا	الَّذِينَ	أَمِنُوا	فَيَعْلَمُونَ
ख़्वाह	मादा मच्छर की हो	या जो	ऊपर है उसके	तो रहे	वो जो	ईमान लाए	पस वो इल्म रखते हैं
أَنَّهُ	الْحَقُّ	مِنْ رَبِّهِمْ ^ج	وَأَمَّا	الَّذِينَ	كَفَرُوا	فَيَقُولُونَ	
बेशक वो	हक़ है	उनके रब की तरफ़ से	और रहे	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	तो वो कहते हैं	
مَاذَا	أَرَادَ	اللَّهُ	بِهَذَا	مَثَلًا ^ط	يُضِلُّ	بِهِ	كَثِيرًا ^ط
क्या	इरादा किया	अल्लाह ने	साथ इस	मिसाल के	वो गुमराह करता है	साथ इसके	कसीर (तादाद) को

وَيَهْدِي	بِهِ	كَثِيرًا ^ط	وَمَا	يُضِلُّ	بِهِ	إِلَّا
और वो हिदायत देता है	साथ उसके	कसीर (तादाद) को	और नहीं	वो गुमराह करता	साथ उसके	मगर
الْفٰسِقِينَ ²⁶	الَّذِينَ	يَنْقُضُونَ	عَهْدَ	اللّٰهِ	مِنْ بَعْدِ	مِيثَاقِهِ ^ص
फ़ासिकों को	वो जो	तोड़ते हैं	अहद (वादा)	अल्लाह का	बाद	उसके मज़बूत करने के
وَيَقْطَعُونَ	مَا	أَمَرَ	اللّٰهُ	بِهِ	أَنْ	يُوصَلَ
और वो काटते हैं	जो	हुकम दिया	अल्लाह ने	उसका	कि	वो जोड़ा जाए
فِي الْأَرْضِ ^ط	أُولَئِكَ	هُمْ	الْخٰسِرُونَ ²⁷	كَيْفَ	تَكْفُرُونَ	
ज़मीन में	यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	किस तरह	तुम इंकार करते हो	
بِاللّٰهِ	وَ كُنْتُمْ	أَمْوَائًا	فَاحْيَاكُمْ ^ج	ثُمَّ	يُيْتِكُمْ	ثُمَّ
अल्लाह का	थे तुम	मुर्दे	फिर उसने ज़िंदा किया तुम्हें	फिर	वो मौत देगा तुम्हें	फिर
يُحْيِيكُمْ	ثُمَّ	إِلَيْهِ	تَرْجِعُونَ ²⁸	هُوَ	الَّذِي	خَلَقَ
वो ज़िंदा करेगा तुम्हें	फिर	उसी की तरफ़	तुम लौटाए जाओगे	वो ही	जिसने	पैदा किया
مَا فِي الْأَرْضِ	جَمِيعًا	ثُمَّ	اسْتَوَى	إِلَى السَّمَاءِ	فَسَوَّاهُنَّ	
जमीन में है	सब का सब	फिर	वो मुतावज्जह हुआ	तरफ़	आसमान के	पस दुरुस्त कर दिया उन्हें
سَبْعَ	سَمَوَاتٍ ^ط	وَهُوَ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيمٌ ²⁹	وَإِذْ
सात	आसमानों में	और वो	हर	चीज़ का	ख़ूब इल्म रखने वाला है	और जब
قَالَ	رَبُّكَ	لِلْمَلٰٓئِكَةِ	إِنِّي	جَاعِلٌ	فِي الْأَرْضِ	خَلِيفَةً ^ط
फ़रमाया	आपके रब ने	फ़रिश्तों से	बेशक मैं	बनाने वाला हूँ	ज़मीन में	ख़लीफ़ा
قَالُوا	أَتَجْعَلُ	فِيهَا	مَنْ	يُفْسِدُ	فِيهَا	وَيَسْفِكُ
उन्होंने कहा	क्या तू बनाएगा	इसमें	उसको जो	फ़साद करेगा	इसमें	और बहाएगा
						الدِّمَآءِ ^ج
						खून

وَنَحْنُ	نُسَبِّحُ	بِحَمْدِكَ	وَنُقَدِّسُ	لَكَ ^ط	قَالَ	إِنِّي
और हम	हम तस्बीह करते हैं	साथ तेरी तारीफ के	और हम पाकीज़गी बयान करते हैं	तेरी	फ़रमाया	बेशक मैं
أَعْلَمُ	مَا لَا	تَعْلَمُونَ ³⁰	وَعَلَّمَ	آدَمَ	الْأَسْبَاءَ	كُلَّهَا
मैं जानता हूँ	जो नहीं	तुम जानते	और उसने सिखा दिए	आदम को	नाम	सब उनके
ثُمَّ	عَرَضَهُمْ	عَلَى الْمَلَكَةِ ^ل	فَقَالَ	أَنْبِئُونِي	بِأَسْبَاءِ	هَؤُلَاءِ
फिर	पेश किया उन्हें	फ़रिश्तों पर	फिर फ़रमाया	ख़बर दो मुझे	नामों की	उन सबके
إِنْ	كُنْتُمْ	صَادِقِينَ ³¹	قَالُوا	سُبْحَنَكَ	لَا	عِلْمَ
अगर	हो तुम	सच्चे	उन्होंने कहा	पाक है तू	नहीं	कोई इल्म
لَنَا	إِلَّا	مَا	عَلَّمْتَنَا ^ط	إِنَّكَ	أَنْتَ	الْعَلِيمُ
हमारे लिए	मगर	जो	सिखाया तूने हमें	बेशक तू	तू ही है	बहुत इल्म वाला
يَا أَدَمُ	أَنْبِئُهُمْ	بِأَسْبَائِهِمْ ^ج	فَلَمَّا	أَنْبَاهَهُمْ	بِأَسْبَائِهِمْ ^ل	
ऐ आदम	ख़बर दो इन्हें	उनके नामों की	फिर जब	उसने ख़बर दी उन्हें	उनके नामों की	
قَالَ	أَلَمْ	أَقُلْ	لَكُمْ	إِنِّي	أَعْلَمُ	غَيْبِ
फ़रमाया	क्या नहीं	मैंने कहा था	तुम से	बेशक मैं	मैं जानता हूँ	ग़ैब
وَالْأَرْضِ ^ل	وَأَعْلَمُ	مَا	تُبْدُونَ	وَمَا	كُنْتُمْ	تَكْتُمُونَ ³³
और ज़मीन का	और मैं जानता हूँ	जो	तुम ज़ाहिर करते हो	और जो	हो तुम	छुपाते
وَإِذْ	قُلْنَا	لِلْمَلَكَةِ	اسْجُدُوا	لِأَدَمَ	فَسَجَدُوا	إِلَّا
और जब	कहा हमने	फ़रिश्तों से	सज्दा करो	आदम को	तो उन्होंने सज्दा किया	सिवाय
أَبَى	وَاسْتَكْبَرَ ^ق	وَكَانَ	مِنَ الْكَافِرِينَ ³⁴	وَقُلْنَا	يَا أَدَمُ	
उसने इंकार किया	और बड़ा बन्ना चाहा	और हो गया	काफ़िरों में से	और कहा हमने	ऐ आदम	

أَسْكُنْ	أَنْتَ	وَزَوْجُكَ	الْجَنَّةَ	وَكُلَا	مِنْهَا	رَعْدًا
रहो	तुम	और बीवी तुम्हारी	जन्नत में	और तुम दोनों खाओ	इसमें से	मज़े से
حَيْثُ	شِئْتُمَا	وَلَا	تَقْرَبَا	هَذِهِ	الشَّجَرَةَ	فَتَكُونَا
जहां से	तुम दोनों चाहो	और ना	तुम दोनों करीब जाना	उस	दरख़्त	वरना तुम दोनों हो जाओगे
مِنَ الظَّالِمِينَ	فَازَلَّهَا	الشَّيْطَانُ	عَنْهَا	فَأَخْرَجَهَا		
ज़ालिमों में से	फिर फुसला दिया उन दोनों को	शैतान ने	उससे	फिर निकलवा दिया उन दोनों को		
مِمَّا	كَانَا	فِيهِ	وَقُلْنَا	اهْبِطُوا	بَعْضُكُمْ	لِبَعْضٍ
उससे जो	वो दोनों थे	जिसमें	और कहा हमने	उतर जाओ	बाज़ तुम्हारे	बाज़ के लिए
وَلَكُمْ	فِي الْأَرْضِ	مُسْتَقَرٌّ	وَمَتَاعٌ	إِلَى حِينٍ	فَتَلْقَى	
और तुम्हारे लिए	ज़मीन में	जाए करार है	और फ़ायदा उठाना है	एक वक़्त तक	पस सीख लिए	
أَدَمُ	مِنْ رَبِّهِ	كَلِمَاتٍ	فَتَابَ	عَلَيْهِ	إِنَّهُ	هُوَ
आदम ने	अपने रब से	चंद कलिमात	फिर वो महरबान हुआ	उस पर	बेशक वो	वो ही है
الرَّحِيمُ	قُلْنَا	اهْبِطُوا	مِنْهَا	جَمِيعًا	فَإِمَّا	
निहायत रहम करने वाला	कहा हमने	उतर जाओ	इससे	सब के सब	फिर अगर	
يَأْتِيَنَّكُمْ	مِّنِّي	هُدًى	فَمَنْ	تَبِعَ	هُدَايَ	فَلَا
आए तुम्हारे पास	मेरी तरफ़ से	कोई हिदायत	तो जिसने	पैरवी की	मेरी हिदायत की	तो ना
خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُونَ	وَالَّذِينَ	كَفَرُوا
कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो	ग़मगीन होंगे	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया
وَكَذَّبُوا	بِآيَاتِنَا	أُولَئِكَ	أَصْحَابُ	النَّارِ	هُمْ	فِيهَا
और झुठलाया	हमारी आयात को	यही लोग हैं	साथी	आग के	वो	उसमें

خُلِدُونَ ③٩	يَبْنِي إِسْرَءِيلَ	اذْكُرُوا	نِعْمَتِي	الَّتِي	أَنْعَمْتُ
हमेशा रहने वाले हैं	ऐ बनी इस्राईल	याद करो	मेरी नेमत	वो जो	इनआम की मैंने
عَلَيْكُمْ	وَأَوْفُوا	بِعَهْدِي	أَوْفِ	بِعَهْدِكُمْ ٣	وَإِيَّايَ
तुम पर	और पूरा करो	मेरे अहद को	मैं पूरा करूंगा	तुम्हारे अहद को	और सिर्फ मुझ ही से
فَارْهَبُون ④٠	وَأَمِنُوا	بِمَا	أَنْزَلْتُ	مُصَدِّقًا	لِّهَا
पस डरो मुझसे	और ईमान लाओ	उस पर जो	नाज़िल किया मैंने	तस्दीक करने वाला	उसके लिए जो
وَلَا تَكُونُوا	أَوَّلَ	كَافِرٍ	بِهِ ٥	وَلَا تَشْتَرُوا	بِآيَتِي
और ना	तुम हो जाओ	सबसे पहला (गिरोह)	इंकार करने वाला	इसका	और ना
وَلَا تَكُونُوا	أَوَّلَ	كَافِرٍ	بِهِ ٥	وَلَا تَشْتَرُوا	بِآيَتِي
और ना	तुम हो जाओ	सबसे पहला (गिरोह)	इंकार करने वाला	इसका	और ना
ثَمَنًا قَلِيلًا ٦	وَإِيَّايَ	فَاتَّقُون ④١	وَلَا تَلْبِسُوا	الْحَقَّ	بِالْبَاطِلِ
कीमत	थोड़ी	और सिर्फ मुझ ही से	पस डरो मुझसे	और ना	तुम गडमड करो
بِالْبَاطِلِ	وَتَكْتُمُوا	الْحَقَّ	وَأَنْتُمْ	تَعْلَمُونَ ④٢	وَأَقْبِسُوا
साथ बातिल के	और (ना) तुम छुपाओ	हक को	हालांकि तुम	इल्म रखते हो	और क़ायम करो
الصَّلَاةَ	وَأَتُوا	الزَّكَاةَ	وَارْكَعُوا	مَعَ	الرَّكْعَيْنِ ④٣
नमाज़	और अदा करो	ज़कात	और रुकूअ करो	साथ	रुकूअ करने वालों के
النَّاسَ	بِالْبِرِّ	وَتَنْسَوْنَ	أَنْفُسَكُمْ	وَأَنْتُمْ	تَتْلُونَ
लोगों को	नेकी का	और तुम भूल जाते हो	अपने नफ़्सों को	हालांकि तुम	तिलावत करते हो
الْكِتَابَ ٧	أَفَلَا تَعْقِلُونَ ④٤	وَأَسْتَعِينُوا	بِالصَّبْرِ	وَالصَّلَاةِ ٨	وَإِنَّهَا
किताब की	क्या फिर नहीं	तुम अक़ल से काम लेते	और मदद तलब करो	साथ सब्र	और नमाज़ के
لَكَبِيرَةٌ ٩	إِلَّا	عَلَى	الْخَشِيعِينَ ④٥	الَّذِينَ	يُظُنُّونَ
अलबत्ता बड़ी (भारी) है	मगर	ऊपर	खुशूअ करने वालों के	वो जो	यक़ीन रखते हैं
لَكَبِيرَةٌ ٩	إِلَّا	عَلَى	الْخَشِيعِينَ ④٥	الَّذِينَ	يُظُنُّونَ
अलबत्ता बड़ी (भारी) है	मगर	ऊपर	खुशूअ करने वालों के	वो जो	यक़ीन रखते हैं

مُلَقُّوٓا۟	رَبِّهِمْ	وَ اَنَّهُمْ	اِلَيْهِ	رٰجِعُوْنَ ٤٦	يَبْنٰى اِسْرَءٰىلَ
मुलाक़ात करने वाले हैं	अपने रब से	और बेशक वो	उसी की तरफ़	लौटने वाले हैं	ऐ बनी इस्राईल
اٰذْكُرُوٓا۟	نِعْمَتِيۡ	الَّتِيۡ	اَنْعَمْتُ	عَلَيْكُمْ	وَ اِنِّیۡ
याद करो	मेरी नेअमत	वो जो	इनआम की मैंने	तुम पर	और बेशक मैं
فَضَّلْتُكُمْ	اٰذْكُرُوٓا۟	نِعْمَتِيۡ	الَّتِيۡ	اَنْعَمْتُ	عَلَيْكُمْ
फ़ज़ीलत दी मैंने तुम्हें	याद करो	मेरी नेअमत	वो जो	इनआम की मैंने	तुम पर
وَاَتَّقُوا	يَوْمًا	لَّا تَجْزِيۡ	نَفْسٌ	عَنْ نَّفْسٍ	عَلٰى الْعٰلَمِيْنَ ٤٧
और डरो	उस दिन से	ना काम आएगा	कोई नफ़्स	किसी नफ़्स के	तमाम ज़हानों पर
شَيْعًا	وَلَا	يُقْبَلُ	مِنْهَا	شَفَاعَةٌ	وَلَا
कुछ भी	और ना	कुबूल की जाएगी	उससे	कोई सिफ़ारिश	और ना
عَدْلٌ	وَلَا	هُمْ	يُنْصَرُونَ ٤٨	وَ اِذْ	نَجَّيْنٰكُمْ
कोई बदला	और ना	वो	वो मदद किए जाएंगे	और जब	निजात दी हमने तुम्हें
يَسْـَٔمُوكُمْ	سُوءَ	الْعَذَابِ	يَذَبِّحُونَ	اِبْنَاءَكُمْ	وَ يَسْتَحْيُونَ
वो तकलीफ़ देते थे तुम्हें	बुरे	अज़ाब की	वो ख़ूब ज़िबाह करते थे	तुम्हारे बेटों को	और वो ज़िंदा छोड़ देते थे
نِسَاءَكُمْ ٤٩	وَ فِىۡ ذٰلِكُمْ	بَلَاءٌ	مِّنۡ رَّبِّكُمْ	عَظِيمٌ ٥٠	اَلۡفِرْعَوْنَ
तुम्हारी औरतों को	और इसमें	आज़माइश थी	तुम्हारे रब की तरफ़ से	बहुत बड़ी	आले फ़िरऔन को
وَ اِذْ	فَرَقْنَا	بِكُمْ	الْبَحْرَ	فَاَنْجَيْنٰكُمْ	وَ اَغْرَقْنَا
और जब	फाड़ा हमने	तुम्हारे लिए	समुन्दर को	फिर निजात दी हमने तुम्हें	और गर्क कर दिया हमने
اَلۡفِرْعَوْنَ	وَ اَنْتُمْ	تَنْظُرُونَ ٥٠	وَ اِذْ	وَعَدْنَا	مُوسٰى
आले फ़िरऔन को	और तुम	देख रहे थे	और जब	वादा किया हमने	मूसा से
اَرْبَعِيْنَ	لَيْلَةً	ثُمَّ	اَتَّخَذْتُمْ	الْعِجْلَ	مِنْۢ بَعْدِهٖ
चालीस	रातों का	फिर	बना लिया तुमने	बछड़े को (माबूद)	उसके बाद
وَ اَنْتُمْ	اَرْبَعِيْنَ	لَيْلَةً	ثُمَّ	اَتَّخَذْتُمْ	الْعِجْلَ
और तुम	चालीस	रातों का	फिर	बना लिया तुमने	बछड़े को (माबूद)

ظَلِمُونَ ﴿٥١﴾	ثُمَّ	عَفَوْنَا	عَنْكُمْ	مِّنْ بَعْدِ	ذَلِكَ	لَعَلَّكُمْ
ज़ालिम थे	फिर	दरगुज़र किया हमने	तुमसे	बाद	उसके	ताकि तुम
تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾	وَإِذْ	آتَيْنَا	مُوسَى	الْكِتَابَ	وَالْفُرْقَانَ	لَعَلَّكُمْ
शुक्र अदा करो	और जब	दी हमने	मूसा को	किताब	और फुरकान	ताकि तुम
تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾	وَإِذْ	قَالَ	مُوسَى	لِقَوْمِهِ	يَقَوْمِ	إِنَّكُمْ
हिदायत पा जाओ	और जब	कहा	मूसा ने	अपनी क्रौम से	ऐ मेरी क्रौम	बेशक तुम
ظَلَمْتُمْ	أَنْفُسَكُمْ	بِاتِّخَاذِكُمْ	الْعِجْلَ	فَتُوبُوا	إِلَى	بَارِيكُمْ
ज़ुल्म किया तुमने	अपनी जानों पर	बवजह बनाने के तुम्हारे	बछड़े को (माबूद)	पस तौबा करो	तरफ़	अपने पैदा करने वाले के
فَأَقْتُلُوا	أَنْفُسَكُمْ ط	ذَلِكَ	خَيْرٌ	لَّكُمْ	عِنْدَ	بَارِيكُمْ ط
तो क़त्ल करो	अपने आप को	ये	बेहतर है	तुम्हारे लिए	नज़दीक	तुम्हारे पैदा करने वाले के
فَتَابَ	عَلَيْكُمْ ط	إِنَّهُ	هُوَ	التَّوَّابُ	الرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾	وَإِذْ
फिर वो	तुम पर	बेशक वो	वो ही है	बहुत तौबा कुबूल करने वाला	निहायत रहम करने वाला	और जब
قُلْتُمْ	يُوسَى	لَنْ	نُؤْمِنَ	لَكَ	حَتَّىٰ	نَرَى
कहा तुमने	ऐ मूसा	हरगिज़ नहीं	हम बात मानेंगे	तेरी	यहां तक कि	हम देख लें
جَهْرَةً	فَاخَذَتْكُمْ	الصُّعِقَةُ	وَأَنْتُمْ	تَنْظُرُونَ ﴿٥٥﴾	ثُمَّ	بَعَثْنَاكُمْ
रु ब रु/सामने	फिर पकड़ लिया तुम्हें	बिजली की कड़क ने	और तुम	देख रहे थे	फिर	उठाया हमने तुम्हें
مِّنْ بَعْدِ	مَوْتِكُمْ	لَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُونَ ﴿٥٦﴾	وَظَلَّلْنَا	عَلَيْكُمْ	
बाद	तुम्हारी मौत के	ताकि तुम	शुक्र अदा करो	और साया किया हमने	तुम पर	
الْغَمَامَ	وَأَنْزَلْنَا	عَلَيْكُمْ	السَّنَّ	وَالسَّلْوَى ط	كُلُوا	مِنْ طَيِّبَاتِ
बादलों का	और उतारा हमने	तुम पर	मन्न	और सलवा	खाओ	पाकीज़ा चीज़ों से

مَا	رَزَقْنَكُمْ ^ط	وَمَا	ظَلَمُونَا	وَلَكِنْ	كَانُوا	أَنْفُسَهُمْ
जो	रिज़क दिया हमने तुम्हें	और नहीं	उन्होंने जुल्म किया हम पर	और लेकिन	वो	अपनी जानों पर ही
يُظْلِمُونَ ⁵⁷	وَإِذْ	قُلْنَا	ادْخُلُوا	هَذِهِ	الْقَرْيَةَ	فَكُلُوا مِنْهَا
जुल्म करते	और जब	कहा हमने	दाखिल हो जाओ	इस	बस्ती में	फिर खाओ
حَيْثُ	شَعْتُمْ	رَعْدًا	وَادْخُلُوا	الْبَابَ	سُجَّدًا	وَقُولُوا
जहां से	चाहो तुम	मज्जे से	और दाखिल हो जाओ	दरवाज़े से	सज्दा करते हुए	और कहते जाओ
حِطَّةٌ	نَغْفِرُ	لَكُمْ	خَطِيئَتَكُمْ ^ط	وَسَنَزِيدُ	الْحُسَيْنِينَ ⁵⁸	
हितातुन (बख्श दे)	हम बख्श देंगे	तुम्हारे लिए	खताएँ तुम्हारी	और अनकरीब हम ज़्यादा देंगे	ऐहसान करने वालों को	
فَبَدَّلَ	الَّذِينَ	ظَلَمُوا	قَوْلًا	غَيْرَ	الَّذِي	قِيلَ لَهُمْ
तो बदल डाला	जिन्होंने	जुल्म किया था	बात को	सिवाए	उसके जो	कही गई थी
فَأَنْزَلْنَا	عَلَى الَّذِينَ	ظَلَمُوا	رِجْزًا	مِّنَ السَّمَاءِ	بِمَا	كَانُوا
तो नाज़िल किया हमने	उन पर जिन्होंने	जुल्म किया था	अज़ाब	आसमान से	बवजह उसके जो	थे वो
يَفْسُقُونَ ⁵⁹	وَإِذْ	اسْتَسْقَى	مُوسَى	لِقَوْمِهِ	فَقُلْنَا	اضْرِبْ
नाफ़रमानी करते	और जब	पानी मांगा	मूसा ने	अपनी क़ौम के लिए	तो कहा हमने	मारो
بَعْصَاكَ	الْحَجَرَ ^ط	فَانْفَجَرَتْ	مِنْهُ	اِثْنَتَا عَشْرَةَ	عَيْنًا ^ط	
अपने असा को	इस पत्थर पर	तो फूट पड़े	उससे	बारह	चश्मे	
قَدْ	عِلِمَ	كُلُّ	أُنَاسٍ	مَّشْرَبَهُمْ ^ط	كُلُوا	وَاشْرَبُوا
तहक़ीक़	जान लिया	सब	लोगों ने	घाट अपना	खाओ	और पियो
اللَّهُ	وَلَا	تَعْتَوْا	فِي الْأَرْضِ	مُفْسِدِينَ ⁶⁰	وَإِذْ	قُلْتُمْ
अल्लाह के	और ना	तुम फ़साद करो	ज़मीन में	मुफ़सिद बन कर	और जब	कहा तुमने
						ऐ मूसा

لَنْ	نُصْبِرَ	عَلَى طَعَامٍ	وَاحِدٍ	فَادُعٍ	لَنَا	رَبِّكَ	يُخْرِجُ
हरगिज़ नहीं	हम सब करेंगे	खाने पर	एक ही	पस तुम् दुआ करो	हमारे लिए	अपने रब से	वो निकाले
لَنَا	مِمَّا	تُنْبِتُ	الْأَرْضُ	مِنْ بَقْلِهَا	وَقِتْلَائِهَا	وَقَوْمَهَا	
हमारे लिए	उसमें से जो	उगाती है	ज़मीन	सब्ज़ी अपनी	और ककड़ी अपनी	और गंदुम अपनी	
وَعَدَاسِهَا	وَبَصَلِهَا	قَالَ	اَتَسْتَبْدِلُونَ	الَّذِي	هُوَ	أَدْنَى	
और मसूर अपने	और प्याज़ अपना	कहा	क्या तुम बदलना चाहते हो	उसे जो	वो	अदना है	
بِالَّذِي	هُوَ	خَيْرٌ	إِهْبِطُوا	مِصْرًا	فَإِنَّ	لَكُمْ	مَا
बदले उसके जो	वो	बेहतर है	उतर जाओ	शहर में	तो बेशक	तुम्हारे लिए है	जो
سَأَلْتُمْ	وَضُرِبَتْ	عَلَيْهِمْ	الذِّلَّةُ	وَالسُّكْنَةُ	وَبَاءُوا		
सवाल किया तुमने	और मार दी गई	उन पर	ज़िल्लत	और मोहताजी	और वो पलटे		
بِغَضَبٍ	مِّنَ اللَّهِ	ذَلِكَ	بِأَنَّهُمْ	كَانُوا	يَكْفُرُونَ	بِأَيِّ	
साथ ग़ज़ब के	अल्लाह की तरफ़ से	ये	बवजह उसके कि वो	थे वो	कुफ़र करते	साथ आयात के	
اللَّهُ	وَيَقْتُلُونَ	النَّبِيِّنَ	بِغَيْرِ	الْحَقِّ	ذَلِكَ	بِمَا	
अल्लाह की	और वो क़त्ल करते थे	नबियों को	बग़ैर	हक़ के	ये	बवजह उसके जो	
عَصَوْا	وَكَانُوا	يَعْتَدُونَ	إِنَّ	الَّذِينَ	آمَنُوا	وَالَّذِينَ	
उन्होंने नाफ़रमानी की	और थे वो	हद से निकल जाते	बेशक	वो लोग जो	ईमान लाए	और वो लोग जो	
هَادُوا	وَالنَّصْرَى	وَالصَّبِيَّانَ	مَنْ	أَمَنَ	بِاللَّهِ	وَالْيَوْمِ الْآخِرِ	
यहूदी बन गए	और नस्रानी	और साबी	जो कोई	ईमान लाया	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	
وَعَمِلَ	صَالِحًا	فَلَهُمْ	أَجْرُهُمْ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ	وَلَا	خَوْفٌ
और उसने अमल किए	नेक	तो उनके लिए	अज़्र है उनका	पास	उनके रब के	और ना	कोई ख़ौफ़ होगा

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾	وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا	فَوْقَكُمْ الطُّورَ ۖ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا	فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾	ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ ۚ	فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾	وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ	فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً ۖ خَسِيفِينَ ﴿٦٥﴾	فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا	لِّهَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾	وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا	بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوعًا قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ	أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ
उन पर और ना वो शमगीन होंगे	और जब लिया हमने	ऊपर तुम्हारे तूर को पकड़ो जो दिया हमने तुम्हें साथ कुव्वत के और याद करो जो	मुत्तक्री बन जाओ ताकि तुम फिरे	उसके बाद फिर गए तुम	फिर अगर ना होता फ़ज़ल अल्लाह का तुम पर और रहमत उसकी अलबत्ता होते तुम	और अलबत्ता तहक़ीक़ तुम में से हद से निकल गए उनको जो सब्त (हफ्ते के दिन) में	तो कहा हमने उनसे हो जाओ बंदर ज़लील व ख़वार ज़ल्लना तो बना दिया हमने उन्हें इबरत	इबरत	मुत्तक्री लोगों के लिए और नसीहत उनके पीछे (आने वाले) थे और जो उनके सामने थे उनके लिए जो	तुम ज़बह करो कि हुक्म देता है तुम्हें अल्लाह बेशक अपनी क़ौम से मूसा ने कहा और जब	कहा और ना होना मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह की कि	जाहिलों में से उन्होंने कहा दुआ करो हमारे लिए अपने रब से वो वाज़ेह कर दे

لَنَا	مَا	هِيَ ٥	قَالَ	إِنَّهُ	يَقُولُ	إِنَّهَا	بَقَرَةٌ	لَا فَارِضٌ
हमारे लिए	कैसी हो	वो	कहा	बेशक वो	फ़रमाता है	बेशक वो	गाय	ना बूढ़ी हो
وَلَا يَكُرُّ ٥	عَوَانٌ	بَيْنَ	ذَلِكَ ٥	فَاعْمَلُوا	مَا	تُؤْمَرُونَ ⑥8		
और ना	छोटी	औसत उम्र (की हो)	दर्मियान	उसके	तो करो	जो	तुम हुक्म दिए जाते हो	
قَالُوا	ادْعُ	لَنَا	رَبَّكَ	يُبَيِّنُ	لَنَا	مَا	لَوْنُهَا ٥	قَالَ
उन्होंने कहा	दुआ करो	हमारे लिए	अपने रब से	वो वाज़ेह कर दे	हमारे लिए	कैसा है	रंग उसका	कहा
إِنَّهُ	يَقُولُ	إِنَّهَا	بَقَرَةٌ	صَفْرَاءُ	فَاقِعٌ	لَوْنُهَا		
बेशक वो	वो फ़रमाता है	बेशक वो	गाय है	ज़र्द रंग की	ख़ूब गहरा है	रंग उसका		
تَسُرُّ	النَّظِيرِينَ ⑥9	قَالُوا	ادْعُ	لَنَا	رَبَّكَ	يُبَيِّنُ	لَنَا	
खुश करती है	देखने वालों को	उन्होंने कहा	दुआ करो	हमारे लिए	अपने रब से	वो वाज़ेह कर दे	हमारे लिए	
مَا	هِيَ ٥	إِنَّ	الْبَقَرَ	تَشَبَهَ	عَلَيْنَا ٥	وَإِنَّا	إِنْ	شَاءَ
कैसी हो	वो	बेशक	गाय	मुश्तबा हो गई है	हम पर	और बेशक हम	अगर	चाहा
اللَّهُ	لَيُهْتَدُونَ ⑦0	قَالَ	إِنَّهُ	يَقُولُ	إِنَّهَا	بَقَرَةٌ	لَا	
अल्लाह ने	अलबत्ता राह पा लेने वाले हैं	कहा	बेशक वो	फ़रमाता है	बेशक वो	गाय है	ना	
ذُلُولٌ	تُشِيرُ	الْأَرْضَ	وَلَا	تَسْقِي	الْحَرْثَ ٥	مُسْلَبَةً ٥	لَا	
जुती हुई	कि वो हल चलाती हो	ज़मीन में	और ना	सैराब करती है	खेती को	सही सलामत हो	ना हो	
شَيْءَ	فِيهَا ٥	قَالُوا	الْعَنَ	جِئْتَ	بِالْحَقِّ ٥	فَذَبَحُوهَا		
कोई दाग़	उसमें	उन्होंने कहा	अब	तू लाया है	हक़ को	फ़िर उन्होंने ज़बह किया उसे		
وَمَا	كَادُوا	يَفْعَلُونَ ⑦1	وَإِذْ	قَتَلْتُمْ	نَفْسًا	فَادْرَأْتُمْ		
और ना	वो करीब थे	वो करते	और जब	क़त्ल किया तुमने	एक नफ़्स को	फिर एक-दूसरे पर डालने लगे तुम		

فِيهَا ^ط	وَاللَّهُ	مُخْرَجٌ	مَا	كُنْتُمْ	تَكْتُمُونَ ^{ج 72}	فَقُلْنَا
उस (के बारे) में	और अल्लाह	निकालने वाला था	जो	थे तुम	छुपाते	पस कहा हमने
اضْرِبُوهُ	بِبَعْضِهَا	كَذَلِكَ	يُحْيِي	اللَّهُ	الْمَوْتَى	وَيُرِيكُمْ
मारो उसे	साथ इसके बाज़ हिस्से के	इसी तरह	जिंदा करेगा है	अल्लाह	मर्दों को	और वो दिखाता है तुम्हें
آيَتِهِ	لَعَلَّكُمْ	تَعْقِلُونَ ⁷³	ثُمَّ	قَسَتْ	قُلُوبُكُمْ	مِّنْ بَعْدِ
अपनी निशानियां	ताकि तुम	अक़ल से काम लो	फिर	सख़्त हो गए	दिल तुम्हारे	बाद
ذَلِكَ	فَهِىَ	كَالْحِجَارَةِ	أَوْ	أَشَدُّ	قَسْوَةً	إِنَّ
उसके	तो वो	पत्थरों की तरह हैं	या	ज़्यादा शदीद	सख़्ती में	और बेशक
مِنَ الْحِجَارَةِ	لَهَا	يَتَفَجَّرُ	مِنْهُ	الْأَنْهَارُ ^ط	وَإِنَّ	مِنْهَا
बाज़ पत्थर	अलबत्ता वो हैं जो	फूट पड़ती हैं	उनसे	नहरें	और बेशक	कुछ उनमें से
لَهَا	يَشَقُّ	فِيَخْرُجُ	مِنْهُ	الْبَاءُ	وَإِنَّ	مِنْهَا
अलबत्ता वो हैं जो	शक़ हो जाते हैं	फिर निकल आता है	उनसे	पानी	और बेशक	कुछ उनमें से
يَهْبِطُ	مِنْ خَشْيَةِ	اللَّهُ ^ط	وَمَا	اللَّهُ	بِغَافِلٍ	عَبَا
गिर पड़ते हैं	ख़ौफ़ से	अल्लाह के	और नहीं	अल्लाह	शाफ़िल	उनसे जो
أَفَتَطْمَعُونَ	أَنْ	يُؤْمِنُوا	لَكُمْ	وَقَدْ	كَانَ	فَرِيقٌ
क्या फिर तुम तमा रखते हो	कि	वो मान जाएंगे	तुम्हारे लिए	हालांकि तहकीक़	है	उनमें
يَسْعَوْنَ	كَلِمَ	اللَّهُ	ثُمَّ	يَحَرِّفُونَهُ	مِنْ بَعْدِ	مَا
वो सुनते हैं	कलाम	अल्लाह का	फिर	वो तहरीफ़ कर डालते हैं उसमें	इसके बाद	जो
وَهُمْ	يَعْلَمُونَ ⁷⁵	وَإِذَا	لَقُوا	الَّذِينَ	أَمَنُوا	قَالُوا
जबकि वो	इल्म रखते हैं	और जब	वो मुलाक़ात करते हैं	उनसे जो	ईमान लाए	वो कहते हैं
						ईमान लाए हम

وَإِذَا	خَلَا	بَعْضُهُمْ	إِلَى بَعْضٍ	قَالُوا	اتَّحَدَّثُوهُمْ
और जब	अलेहदा होते हैं	बाज़ उनके	तरफ़ बाज़ के	वो कहते हैं	क्या तुम बातें बताते हो उन्हें
بِمَا	فَتَحَ	اللَّهُ	عَلَيْكُمْ	لِيَحْجُوكُمُ	بِهِ
जो	खोला है	अल्लाह ने	तुम पर	ताकि वो झगड़ा करें तुमसे	साथ उसके
عِنْدَ	رَبِّكُمْ	ط			
तुम्हारे रब के	पास				
أَفَلَا	تَعْقِلُونَ ⁷⁶	أَوَلَا	يَعْلَمُونَ	أَنَّ	اللَّهُ
क्या फिर नहीं	तुम अक्ल से काम लेते	क्या भला नहीं	वो इल्म रखते	बेशक	अल्लाह
يَعْلَمُ	مَا				
जानता है	जो				
يُسِرُّونَ	وَمَا	يُعْلِنُونَ ⁷⁷	وَمِنْهُمْ	أُمِّيُونَ	لَا يَعْلَمُونَ
वो छुपाते हैं	और जो	वो ज़ाहिर करते हैं	और उनमें से कुछ	अनपढ़ हैं	नहीं वो इल्म रखते
الْكِتَابَ	إِلَّا	أَمَانِيَّ	وَأِنْ	هُمْ	إِلَّا
किताब का	सिवाय	तमन्नाओं के	और नहीं	वो	मगर
يُكْتَبُونَ	الْكِتَابَ	بِأَيْدِيهِمْ ⁷⁸	ثُمَّ	يَقُولُونَ	
लिखते हैं	किताब को	अपने हाथों से	फिर	वो कहते हैं	
هَذَا	مِنْ عِنْدِ اللَّهِ	لِيَشْتَرُوا	بِهِ	ثَمَنًا	قَلِيلًا ⁷⁹
ये	अल्लाह के पास से है	ताकि वो ले लें	बदले उसके	कीमत	थोड़ी
فَوَيْلٌ	لَّهُمْ	مِمَّا	كَتَبَتْ	أَيْدِيهِمْ	وَوَيْلٌ
पस हलाकत है	उनके लिए	उससे जो	लिखा	उनके हाथों ने	और हलाकत है
لَّهُمْ	مِمَّا	يَكْسِبُونَ ⁷⁹	وَقَالُوا	لَنْ	تَمَسَّنَا
उनके लिए	उससे जो	वो कमाते हैं	और उन्होंने कहा	हरगिज़ नहीं	छुएगी हमें
النَّارُ					
आग					
إِلَّا	أَيَّامًا	مَّعْدُودَةً ⁸⁰	قُلْ	اتَّخَذْتُمْ	عِنْدَ اللَّهِ
मगर	दिन	गिने-चुने	कह दीजिए	क्या ले रखा है तुमने	अल्लाह के पास
عَهْدًا					
कोई अहद					

فَلَنْ	يُخْلِفَ	اللَّهُ	عَهْدَهُ	أَمْ	تَقُولُونَ	عَلَى اللَّهِ
तो हरगिज़ नहीं	खिलाफ़ करेगा	अल्लाह	अपने अहद के	या	तुम कहते हो	अल्लाह पर
مَا لَا تَعْلَمُونَ 80	بَلَى	مَنْ	كَسَبَ	سَيِّئَةً	وَأَحَاطَتْ	بِهِ
जो	नहीं तुम इल्म रखते	क्यों नहीं	जिसने	कमाई	कोई बुराई	और घेर लिया
خَطِيعَتُهُ	فَأُولَئِكَ	أَصْحَابُ	النَّارِ	هُمْ	فِيهَا	خَالِدُونَ 81
उसकी ख़ता ने	तो यही लोग हैं	साथी	आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं
وَالَّذِينَ	آمَنُوا	وَعَمِلُوا	الصَّالِحَاتِ	أُولَئِكَ	أَصْحَابُ	الْجَنَّةِ
और वो जो	ईमान लाए	और अमल किए	नेक	यही लोग हैं	साथी	जन्नत के
هُمْ	فِيهَا	خَالِدُونَ 82	وَإِذْ	أَخَذْنَا	مِيثَاقَ	بَنِي إِسْرَءِيلَ
वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और जब	लिया हमने	पुख्ता अहद	बनी इस्राईल से
لَا تَعْبُدُونَ	إِلَّا	اللَّهُ	وَبِالْوَالِدَيْنِ	إِحْسَانًا	وَذِي الْقُرْبَىٰ	
ना तुम इबादत करोगे	मगर	अल्लाह की	और साथ वालिदैन के	एहसान करोगे	और रिश्तेदारों	
وَالْيَتَامَىٰ	وَالْمَسْكِينِ	وَقُولُوا	لِلنَّاسِ	حُسْنًا	وَأَقِيمُوا	
और यतीमों	और मिसकीनों	और कहो	लोगों से	अच्छी (बात)	और कायम करो	
الصَّلَاةَ	وَاتُوا	الزَّكَاةَ	ثُمَّ	تَوَلَّيْتُمْ	إِلَّا	قَلِيلًا
नमाज़	और अदा करो	ज़कात	फिर	मुंह मोड़ लिया तुमने	मगर	बहुत थोड़े
مُعْرِضُونَ 83	وَإِذْ	أَخَذْنَا	مِيثَاقَكُمْ	لَا تَسْفِكُونَ	دِمَاءَكُمْ	
ऐराज़ करने वाले	और जब	लिया हमने	पुख्ता अहद तुमसे	ना तुम बहाओगे	खून अपने	
وَلَا	تُخْرِجُونَ	أَنفُسَكُمْ	مِّن دِيَارِكُمْ	ثُمَّ	أَقْرَرْتُمْ	وَأَنْتُمْ
और ना	तुम निकालोगे	अपने आपको	अपने घरों से	फिर	इक्करार किया तुमने	और तुम

تَشْهَدُونَ ⑧4	ثُمَّ	أَنْتُمْ	هَؤُلَاءِ	تَقْتُلُونَ	أَنْفُسَكُمْ	وَتُخْرِجُونَ
गवाही देते हो	फिर	तुम	वो ही लोग हो	तुम क़त्ल कर डालते हो	अपने आप(अपनों को)	और तुम निकाल देते हो
فَرِيقًا	مِّنْكُمْ	مِّنْ دِيَارِهِمْ	تَظْهَرُونَ	عَلَيْهِمْ	بِالْإِثْمِ	
एक गिरोह को	अपने में से	उनके घरों से	तुम चढ़ाई करते हो	उन पर	साथ गुनाह	
وَالْعُدْوَانَ ٭	وَإِنْ	يَأْتُوَكُمْ	أُسْرَى	تُفْدُوهُمْ		
और ज़्यादाती के	और अगर	वो आएँ तुम्हारे पास	कैदी बन कर	तुम फ़िदया देकर छुड़ाते हो उन्हें		
وَهُوَ	مُحَرَّمٌ	عَلَيْكُمْ	إِخْرَاجُهُمْ ٭	أَفْتَوْمُنُونَ	بِبَعْضِ	
हालांकि वो	हराम किया गया था	तुम पर	निकालना उनका	क्या फिर तुम ईमान लाते हो	बाज़ (हिस्से) पर	
الْكِتَابِ	وَتَكْفُرُونَ	بِبَعْضِ ٭	فَمَا	جَزَاءُ	مَنْ	يَفْعَلُ ذَلِكَ
किताब के	और तुम कुफ़र करते हो	साथ बाज़ के	तो नहीं	बदला	उसका जो	करता है ये
مِّنْكُمْ	إِلَّا	خِزْيٌ	فِي الْحَيَاةِ	الدُّنْيَا ٭	وَيَوْمَ	الْقِيَمَةِ
तुम में से	मगर	रुस्वाई	ज़िन्दगी में	दुनिया की	और दिन	क़यामत के
يُرَدُّونَ	إِلَى	أَشَدِّ	الْعَذَابِ ٭	وَمَا	اللَّهُ	بِغَافِلٍ
वो लौटाए जाएँगे	तरफ़	शदीद-तरीन	अज़ाब के	और नहीं	अल्लाह	शाफ़िल
عَبَا	تَعْمَلُونَ	أُولَئِكَ	الَّذِينَ	اشْتَرَوْا	الْحَيَاةَ	
उससे जो	तुम अमल करते हो	यही वो लोग हैं	जिन्होंने	ख़रीद ली	ज़िन्दगी	
الدُّنْيَا	بِالْآخِرَةِ ٭	فَلَا	يُخَفَّفُ	عَنْهُمْ	الْعَذَابُ	وَلَا
दुनिया की	बदले आख़िरत के	तो ना	हल्का किया जाएगा	उनसे	अज़ाब	और ना
هُمْ	يُنْصَرُونَ ⑧6	وَلَقَدْ	آتَيْنَا	مُوسَى	الْكِتَابَ	وَقَفَّيْنَا
वो	मदद दिए जाएँगे	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	मूसा को	किताब	और पै दर पै भेजे हमने

مِنْ بَعْدِهِ	بِالرُّسُلِ	وَأَتَيْنَا	عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ	الْبَيِّنَاتِ
इसके बाद	कई रसूल	और दी हमने	ईसा इबने मरयम को	रोशन निशानियां
وَإِيْدُنْهُ	بِرُوحِ الْقُدُسِ	أَفْكَلْبَا	جَاءَكُمْ	رَسُولٌ
और कुव्वत दी हमने उसे	साथ रहे कुदुस से	क्या फिर जब भी	आया तुम्हारे पास	कोई रसूल
لَا تَهْوَى	أَنْفُسَكُمْ	اسْتَكْبَرْتُمْ	فَفَرِيقًا	كَذَّبْتُمْ
नहीं ख्वाहिश करते थे	तुम्हारे नफ्स	तकब्वुर किया तुमने	तो एक गिरोह को	झुठलाया तुमने
تَقْتُلُونَ	وَقَالُوا	قُلُوبُنَا	غُلْفٌ	بَلْ
तुम कल्ल करते रहे	और उन्होंने कहा	दिल हमारे	गिलाफ़ हैं	बल्कि
بِكُفْرِهِمْ	فَقَلِيلًا مَّا	يُؤْمِنُونَ	وَلَبَّآ	جَاءَهُمْ
बवजह उनके कुफ़्र के	पस बहुत थोड़े हैं	जो ईमान लाते हैं	और जब	आ गई उनके पास
مِّنْ عِنْدِ	اللّٰهِ	مُصَدِّقٌ	لِّهَا	مَعَهُمْ
पास से	अल्लाह के	तस्दीक करने वाली	उसकी जो	उनके पास है
يَسْتَفْتِحُونَ	عَلَى الَّذِينَ	كَفَرُوا	فَلَبَّآ	جَاءَهُمْ
वो फ़तह मांगते	उन पर जिन्होंने	कुफ़्र किया	तो जब	आ गया उनके पास
عَرَفُوا	كَفَرُوا	بِهِ	فَلَعْنَةُ	اللّٰهِ
उन्होंने पहचान लिया	उन्होंने कुफ़्र किया	साथ उसके	तो लाअनत है	अल्लाह की
بِئْسَبَا	اشْتَرَوْا	بِهِ	أَنْفُسَهُمْ	أَنْ
कितना बुरा है जो	बेच डाला उन्होंने	बदले उसके	अपने नफ़्सों को	कि
اللّٰهُ	بَغِيًّا	أَنْ	يُنْزِلَ	اللّٰهُ
अल्लाह ने	बगावत करते हुए	कि	नाज़िल करता है	अल्लाह
			अपने फ़ज़ल से	जिस पर

يَشَاءُ	مِنْ عِبَادِهِ ٥	فَبَاءُ وَ	بِغَضَبٍ	عَلَى غَضَبٍ ط	وَالْكَافِرِينَ
वो चाहता है	अपने बंदों में से	तो वो लौटे	साथ ग़ज़ब के	ग़ज़ब पर	और काफ़िरों के लिए
عَذَابٌ	مُّهِينٌ ٩٠	وَإِذَا	قِيلَ	لَهُمْ	أَمِنُوا
अज़ाब है	रुस्वाकुन/अहानत आमेज़	और जब	कहा जाता है	उन्हें	ईमान लाओ
أَنْزَلَ	اللَّهُ	قَالُوا	نُؤْمِنُ	بِأَنَّ	أُنْزِلَ
नाज़िल किया	अल्लाह ने	वो कहते हैं	हम ईमान लाएंगे	उस पर जो	नाज़िल किया
بِأَنَّ	وَرَأَاهُ	وَهُوَ	الْحَقُّ	مُصَدِّقًا	لِّبِأَنَّ
साथ उसके जो	इसके इलावा है	हालांकि वो	हक़ है	तस्दीक़ करने वाला है	इस की जो
فَلَمَ	تَقْتُلُونَ	أَنْبِيََاءَ	اللَّهِ	مِنْ قَبْلُ	إِنْ كُنْتُمْ
तो क्यों	तुम क़त्ल करते रहे	नबीयों को	अल्लाह के	इससे पहले	अगर
وَلَقَدْ	جَاءَكُمْ	مُوسَى	بِالْبَيِّنَاتِ	ثُمَّ	اتَّخَذْتُمْ
अलबत्ता तहक़ीक़	आया तुम्हारे पास	मूसा	साथ रोशन निशानियों के	फिर	बना लिया तुमने
مِنْ بَعْدِهِ	وَأَنْتُمْ	ظَالِمُونَ ٩٢	وَإِذَا	أَخَذْنَا	مِيثَاقَكُمْ
बाद इसके	और तुम	ज़ालिम हो	और जब	लिया हमने	पुख़्ता अहद तुमसे
فَوْقَكُمْ	الطُّورَ ط	خُذُوا	مَا	آتَيْنَكُمْ	بِقُوَّةٍ
ऊपर तुम्हारे	तूर को	पकड़ो	जो	दिया हमने तुम्हें	साथ कुव्वत के
قَالُوا	سَبَعْنَا	وَعَصَيْنَا	وَأَشْرَبُوا	فِي قُلُوبِهِمْ	الْعَجَلَ
उन्होंने कहा	सुना हमने	और नाफ़रमानी की हमने	और वो पिला दिए गए	अपने दिलों में	बछड़े की (मुहब्बत)
بِكُفْرِهِمْ ط	قُلْ	بِئْسَا	يَا مَرْكُمُ	بِهِ	إِيْمَانُكُمْ
बवजह अपने कुफ़्र के	कह दीजिए	कितना बुरा है जो	वो हुक़म देता है तुम्हें	जिसका	ईमान तुम्हारा
إِنْ					
अगर					

كُنْتُمْ	مُؤْمِنِينَ 93	قُلْ	إِنْ	كَانَتْ	لَكُمْ	الدَّارُ	الْآخِرَةُ
हो तुम	मोमिन	कह दीजिए	अगर	है	तुम्हारे लिए	घर	आखिरत का
عِنْدَ اللَّهِ	خَالِصَةً	مِّنْ دُونِ	النَّاسِ	فَتَسْنُوا	الْمَوْتَ	إِنْ	
अल्लाह के पास	खास/ मखसूस	इलावा	लोगों के	तो तुम तमन्ना करो	मौत की	अगर	
كُنْتُمْ	صَادِقِينَ 94	وَلَنْ	يَتَسَنَّوَهُ	أَبَدًا	بِمَا	قَدَّامَتْ	
हो तुम	सच्चे	और हरगिज़ नहीं	वो तमन्ना करेंगे उसकी	कभी भी	बवजह उसके जो	आगे भेजा	
أَيْدِيهِمْ	وَاللَّهُ	عَلِيمٌ	بِالظَّالِمِينَ 95	وَلَتَجِدَنَّهُمْ	أَحْرَصَ		
उनके हाथों ने	और अल्लाह	खूब जानने वाला है	ज़ालिमों को	और अलबत्ता तुम ज़रूर पाओगे उन्हें	सबसे ज़्यादा हरीस		
النَّاسِ	عَلَى حَيَوَةٍ 96	وَمِنَ الَّذِينَ	أَشْرَكُوا 97	يُودُ	أَحَدُهُمْ		
लोगों में	ज़िंदगी पर	और उनसे भी जिन्होंने	शिरक किया	चाहता है	हर एक उनका		
لَوْ	يُعَرَّرُ	أَلْفَ	سَنَةٍ 98	وَمَا	هُوَ	بِزُحْرَجِهِ	مِنَ الْعَذَابِ
काश	वो उम्र दिया जाए	हज़ार	साल	हालांकि नहीं	वो	दूर हटाने वाला उसे	अज़ाब से
أَنْ	يُعَرَّرَ 99	وَاللَّهُ	بَصِيرٌ	بِمَا	يَعْمَلُونَ 100	قُلْ	
अगरचे	वो उम्र दिया जाए	और अल्लाह	खूब देखने वाला है	उसे जो	वो अमल करते हैं	कह दीजिए	
مَنْ	كَانَ	عَدُوًّا	لِّجِبْرِيلَ	فَإِنَّهُ	نَزَّلَهُ	عَلَى قَلْبِكَ	
जो	है	दुश्मन	जिब्रील का	तो बेशक उसीने	नाज़िल किया उसे	आपके दिल पर	
بِإِذْنِ اللَّهِ	مُصَدِّقًا	لِّمَا	بَيْنَ يَدَيْهِ	وَهْدَى	وَبُشْرَى		
अल्लाह के इज़्ज़न से	तस्दीक करने वाला है	उसकी जो	इससे पहले है	और हिदायत	और खुशखबरी है		
لِلْمُؤْمِنِينَ 101	مَنْ	كَانَ	عَدُوًّا	لِّلَّهِ	وَمَلَائِكَتِهِ	وَرُسُلِهِ	
मोमिनीन के लिए	जो	है	दुश्मन	अल्लाह का	और उसके फ़रिश्तों का	और उसके रसूलों का	

وَجِبْرِيلَ	وَمِيكَالَ	فَإِنَّ	اللَّهِ	عَدُوٌّ	لِّلْكَافِرِينَ ٩٨
और जिब्रील का	और मीकाईल का	तो बेशक	अल्लाह	दुश्मन है	काफ़िरों का
وَلَقَدْ	أَنْزَلْنَا	إِلَيْكَ	آيَاتٍ	بَيِّنَاتٍ ٩	وَمَا
अलबत्ता तहकीक़	नाज़िल की हमने	आपकी तरफ़	आयात	वाज़ेह	और नहीं
بِهَآءِ	إِلَّا	الْفٰسِقُونَ ٩٩	أَوْ كَلَّهَا	عَهْدُوا	عَهْدًا
उनका	मगर	जो फ़ासिक़ हैं	क्या भला जब कभी	अहद किया उन्होंने	कोई अहद
فَرِيقٌ	مِّنْهُمْ	بَلْ	أَكْثَرُهُمْ	لَا يُؤْمِنُونَ ١٠٠	وَلَهَا
एक गिरोह ने	उनमें से	बल्कि	अक्सर उनके	नहीं ईमान रखते	और जब
جَاءَهُمْ	رَسُولٌ	مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ	مُصَدِّقٌ	لِّهَا	مَعَهُمْ
आ गया उनके पास	एक रसूल	अल्लाह के पास से	तस्दीक़ करने वाला	उसकी जो	उनके पास है
نَبَذَ	فَرِيقٌ	مِّنَ الَّذِينَ	أَوْثَرُوا	الْكِتَابَ ١٠١	كِتَابَ اللَّهِ
फेंक दिया	एक गिरोह ने	उन लोगो में से जो	दिए गए	किताब	अल्लाह की किताब को
وَرَاءَ	ظُهُورِهِمْ	كَانَتْهُمْ	لَا يَعْلَمُونَ ١٠١	وَاتَّبَعُوا	مَا
पीछे	अपनी पुश्तों के	गोया कि वो	नहीं इल्म रखते	और उन्होंने पैरवी की	उसकी जो
تَتَلَوْا	الشَّيَاطِينُ	عَلَىٰ مُلْكٍ	سُلَيْمَانَ ١٠	وَمَا	كَفَرُوا
पढ़ते थे	शयातीन	बादशाहत में	सुलैमान की	और नहीं	कुफ़्र किया था
سُلَيْمَانُ	وَلَكِنَّ	الشَّيَاطِينُ	كَفَرُوا	يَعْلَمُونَ	النَّاسَ
सुलैमान ने	और लेकिन	शयातीन ने	कुफ़्र किया	वो सिखाते थे	लोगों को
السَّحَرِ	وَمَا	أُنْزِلَ	عَلَىٰ	الْبَلَكَيْنِ	بِبَابِلَ
जादू	और जो	नाज़िल किया गया था	ऊपर	दो फ़रिशतों के	बाबिल में
					हारुत

وَمَا رُوتُ ^ط	وَمَا	يُعَلِّمِينَ	مِنْ أَحَدٍ	حَتَّى	يَقُولَا
और मारुत के	और नहीं	वो दोनो सिखाते थे	किसी एक को	यहां तक कि	वो दोनो कहते
إِنَّمَا	نَحْنُ	فِتْنَةٌ	فَلَا	تَكْفُرُ ^ط	فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهَا
बेशक	हम	एक फितना हैं	पस ना	तुम कुफ़र करो	उन दोनो से
مَا	يُفَرِّقُونَ	بِهِ	بَيْنَ	الْمَرءِ	وَزَوْجِهِ
जो	वो जुदाई डालते	उसके साथ	दर्मियान	मर्द	और उसकी बीवी के
هُمْ	بِضَارِّينَ	بِهِ	مِنْ أَحَدٍ	إِلَّا	بِإِذْنِ اللَّهِ ^ط وَيَتَعَلَّمُونَ
वो	ज़रूर पहचाने वाले	साथ उसके	किसी एक को	मगर	अल्लाह के इज़्ज़न से और वो सीखते थे
مَا	يَضُرُّهُمْ	وَلَا	يَنْفَعُهُمْ ^ط	وَلَقَدْ	عَلِمُوا لَكِنِ
जो	नुक्सान देता उन्हें	और ना	नफ़ा देता उन्हें	और अलबत्ता तहक़ीक़	अलबत्ता जिसने
اشْتَرَاهُ	مَا	لَهُ	فِي الْآخِرَةِ	مِنْ خَلَاقٍ ^ط	وَلَبِئْسَ
ख़रीदा उसे	नहीं है	उसके लिए	आख़िरत में	कोई हिस्सा	और अलबत्ता कितना बुरा है
مَا	شَرَوْا	بِهِ	أَنْفُسَهُمْ ^ط	لَوْ	كَانُوا يَعْلَمُونَ ¹⁰²
जो	उन्होंने बेच डाला	बदले उसके	अपनी जानों को	काश	होते
وَلَوْ	أَنَّهُمْ	أَمَنُوا	وَاتَّقَوْا	لَشُوبَهُ ^ط	مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ
और अगर	बेशक वो	ईमान लाते	और तक्वा करते	अलबत्ता सवाब पाते	अल्लाह के पास से
خَيْرٌ	لَوْ	كَانُوا يَعْلَمُونَ ¹⁰³	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ	أَمَنُوا	لَا تَقُولُوا
बेहतर	काश	होते	वो जानते	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो
رَاعِنَا	وَقُولُوا	انْظُرْنَا	وَأَسْمِعُوا	لِلْكَافِرِينَ	عَذَابُ
हमारी रियायत कीजिए	बल्कि कहो	उंज़रना / नज़र कीजिए हमारी तरफ़	और सुना करो	और काफ़िरो के लिए	अज़ाब है

أَلَيْمٌ ⑩④	مَا	يَوَدُّ	الَّذِينَ	كَفَرُوا	مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ	وَلَا
दर्दनाक	नहीं	चाहते	वो जिन्होंने	कुफ़र किया	अहले किताब में से	और ना
الْمُشْرِكِينَ	أَنْ	يُنْزَلَ	عَلَيْكُمْ	مِنْ خَيْرٍ	مِّن رَّبِّكُمْ ط	وَاللَّهُ
मुशरिकीन	कि	नाज़िल की जाए	तुम पर	कोई ख़ैर	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और अल्लाह
يَخْتَصُّ	بِرَحْمَتِهِ	مَنْ	يَشَاءُ	وَاللَّهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيمُ ⑩⑤
ख़ास कर लेता है	साथ अपनी रहमत के	जिसे	वो चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़ल वाला है	बहुत बड़े
مَا	نَنْسَخُ	مِنْ آيَةٍ	أَوْ	نُنْسِهَا	نَأْتِ	مِنْهَا
जो भी	हम मंसूख करते हैं	कोई भी आयत	या	हम भुलवा देते हैं उसे	हम ले आते हैं	बेहतर
أَوْ	مِثْلَهَا ط	أَلَمْ	تَعْلَمُ	أَنَّ	اللَّهُ	عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
या	उस जैसी	क्या नहीं	तुम जानते	बेशक	अल्लाह	ऊपर
قَدِيرٌ ⑩⑥	أَلَمْ	تَعْلَمُ	أَنَّ	اللَّهُ	لَهُ	مُلْكُ السَّمَوَاتِ
बहुत कुदरत रखने वाला है	क्या नहीं	तुम जानते	बेशक	अल्लाह	उसी के लिए है	बादशाहत
وَالْأَرْضِ ط	وَمَا	لَكُمْ	مِّن دُونِ	اللَّهِ	مِنْ وَلِيٍّ	وَلَا
और ज़मीन की	और नहीं	तुम्हारे लिए	सिवाय	अल्लाह के	कोई दोस्त	और ना
نَصِيرٌ	أَمْ	تُرِيدُونَ	أَنْ	تَسْأَلُوا	رُسُولَكُمْ	كَمَا
कोई मददगार	क्या	तुम चाहते हो	कि	तुम सवाल करो	अपने रसूल से	जैसा कि
مُوسَىٰ	مِنْ قَبْلُ	وَمَنْ	يَتَّبَعِلِ	الْكُفْرَ	بِالْإِيمَانِ	فَقَدْ
मूसा	इस से क़ब्ल	और जो कोई	बदले में लेगा	कुफ़र को	ईमान के	तो तहकीक़
ضَلَّ	سَوَاءً	السَّبِيلِ ⑩⑧	وَدَّ	كَثِيرٌ	مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ	
वो भटक गया	सीधे	रास्ते से	चाहते हैं	बहुत से	अहले किताब में से	

السلامة

هُمْ	يَحْزَنُونَ ^ع 112	وَقَالَتْ	الْيَهُودُ	لَيْسَتْ	النَّصْرَى	عَلَى شَيْءٍ ^ص
वो	गमगीन होंगे	और कहा	यहूद ने	नहीं हैं	नसारा	किसी चीज़ पर
وَقَالَتْ	النَّصْرَى	لَيْسَتْ	الْيَهُودُ	عَلَى شَيْءٍ	وَهُمْ	يَتْلُونَ
और कहा	नसारा ने	नहीं हैं	यहूद	किसी चीज़ पर	हालांकि वो	तिलावत करते हैं
الْكِتَابِ ^ط	كَذَلِكَ	قَالَ	الَّذِينَ	لَا يَعْلَمُونَ	مِثْلَ	قَوْلِهِمْ ^ج
किताब की	इसी तरह	कहा	उन्होंने जो	नहीं इल्म रखते	मिसल/मानिंद	उनकी बात के
فَاللَّهُ	يَحْكُمُ	بَيْنَهُمْ	يَوْمَ	الْقِيَامَةِ	فِيمَا	كَانُوا
तो अल्लाह	फ़ैसला करेगा	उनके दर्मियान	दिन	क्रयामत के	उसमें जो	थे वो
يَخْتَلِفُونَ ¹¹³	وَمَنْ	أَظْلَمُ	مِمَّنْ	مَّنَعَ	مَسْجِدَ	اللَّهِ
वो इख़िलाफ़ करते	और कौन है	बड़ा ज़ालिम	उससे जो	मना करे	मस्जिदों से	अल्लाह की
أَنْ	يُذَكَّرَ	فِيهَا	أَسْبَهُ	وَسَعَى	فِي خَرَابِهَا ^ط	أُولَئِكَ
कि	ज़ि़क़्र किया जाए	उनमें	नाम उसका	और वो कोशिश करे	उनकी ख़राबी/वीरानी की	यही लोग हैं
مَا	كَانَ	لَهُمْ	أَنْ	يَدْخُلُوهَا	إِلَّا	خَائِفِينَ ^ه
नहीं	है	उनके लिए	येकि	वो दाख़िल हों उनमें	मगर	डरते हुए
خِزْيٌ	وَلَهُمْ	فِي الْآخِرَةِ	عَذَابٌ	عَظِيمٌ	وَلِلَّهِ	الْبُشْرِقُ
रुस्वाई है	और उनके लिए	आख़िरत में	अज़ाब है	बहुत बड़ा	और अल्लाह ही के लिए है	मशरिक
وَالْمَغْرِبُ	فَإَيْنَمَا	تَوَلَّوْا	فَتَمَّ	وَجْهَهُ	اللَّهُ	إِنَّ
और मग़रिब	फिर जिस तरफ़	तुम मुंह करोगे	तो वहीं है	चेहरा	अल्लाह का	बेशक
وَاسِعٌ	عَلِيمٌ ¹¹⁵	وَقَالُوا	اتَّخَذَ	اللَّهُ	وَلَدًا	سُبْحَنَهُ ^ط
वुसअत वाला	ख़ूब जानने वाला है	और उन्होंने कहा	बना ली	अल्लाह ने	औलाद	पाक है वो

بَلْ	لَهُ	مَا	فِي السَّمَوَاتِ	وَالْأَرْضِ	كُلُّ	لَهُ	فَنُتُونُ ①①⑥
बल्कि	उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में	और ज़मीन में है	सब	उसी के	फ़रमांबरदार हैं
بَدِيعُ	السَّمَوَاتِ	وَالْأَرْضِ	وَإِذَا	قَضَى	أَمْرًا	فَإِنَّمَا	
मूजिद है	आसमानों	और ज़मीन का	और जब	वो फ़ैसला करता है	किसी काम का	तो बेशक	
يَقُولُ	لَهُ	كُنْ	فَيَكُونُ ①①⑦	وَقَالَ	الَّذِينَ	لَا يَعْلَمُونَ	
वो कहता है	उसके लिए	हो जा	तो वो हो जाता है	और कहा	उन्होंने जो	नहीं इल्म रखते	
لَوْ لَا	يُكَلِّمُنَا	اللَّهُ	أَوْ	تَأْتِينَا	آيَةً	كَذَلِكَ	قَالَ
क्यों नहीं	कलाम करता हमसे	अल्लाह	या	आती हमारे पास	कोई निशानी	इसी तरह	कहा था
الَّذِينَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِثْلَ	قَوْلِهِمْ	تَشَابَهَتْ	قُلُوبُهُمْ	قَدْ	
उन्होंने जो	उनसे पहले थे	मिस्ल/मानिंद	उनकी बात के	मुशाबा हो गए	दिल उनके	तहकीक	
بَيْنَنَا	الْأَيِّتِ	لِقَوْمٍ	يُوقِنُونَ ①①⑧	إِنَّا	أَرْسَلْنَاكَ	بِالْحَقِّ	
बयान की हमने	आयात	उन लोगों के लिए	जो यक़ीन रखते हैं	बेशक हमने	भेजा हमने आपको	साथ हक़ के	
بَشِيرًا	وَنَذِيرًا	وَلَا تَسْأَلُ	عَنْ أَصْحَابِ	الْجَحِيمِ ①①⑨			
बशारत देने वाला	और डराने वाला	और ना आप से सवाल किया जाएगा	साथियों के बारे में	जहन्नम के			
وَلَنْ	تَرْضَى	عَنْكَ	الْيَهُودُ	وَلَا	النَّصْرَى	حَتَّى	تَتَّبِعَ
और हरगिज़ नहीं	राज़ी होंगे	आपसे	यहूद	और ना	नसारा	यहां तक कि	आप पैरवी करें
مِلَّتَهُمْ	قُلْ	إِنَّ	هُدَى	اللَّهُ	هُوَ	الْهُدَى	وَلَئِنْ
उनके तरीक़े की	कह दीजिए	बेशक	हिदायत	अल्लाह की	वो ही	असल हिदायत है	और अलबत्ता अगर
اتَّبَعْتَ	أَهْوَاءَهُمْ	بَعْدَ	الَّذِي	جَاءَكَ	مِنَ الْعِلْمِ	مَا	
इत्तबा किया आपने	उनकी ख़्वाहिशत का	बाद इसके	जो	आया आपके पास	इल्म में से	नहीं	

لَكَ	مِنَ اللَّهِ	مِنْ وَلِيٍّ	وَلَا	نَصِيرٌ ⑫②	الَّذِينَ	اتَّيْنَهُمْ
आपके लिए	अल्लाह से (बचाने वाला)	कोई हिमायती	और ना	कोई मददगार	वो लोग जो	दी हमने उन्हें
الْكِتَابَ	يَتْلُونَهُ	حَقٍّ	تِلَاوَتِهِ	أُولَئِكَ	يُؤْمِنُونَ بِهِ ط	
किताब	वो तिलावत करते हैं उसकी	(जैसा) हक़ है	उसकी तिलावत का	यही लोग हैं	ईमान रखते	उस पर
وَمَنْ	يَكْفُرْ بِهِ	فَأُولَئِكَ	هُمْ	الْخٰسِرُونَ ⑫③	يَبْنِيٰٓ اِسْرَءٰٓءِيْلَ	
और जो कोई	कुफ़्र करेगा	उसका	तो यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	ऐ बनी इस्राईल
اٰذْكُرُوْا	نِعْمَتِيْ	الَّتِيْ	اَنْعَمْتُ	عَلَيْكُمْ	وَ اِنِّيْ	فَضَّلْتُكُمْ
याद करो	मेरी नेअमत	वो जो	इनआम की मैंने	तुम पर	और बेशक मैं	फ़ज़ीलत दी थी मैंने तुम्हें
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ⑫④	وَ اتَّقُوا	يَوْمًا	لَّا تَجْزِيْ	نَفْسٌ	عَنْ نَّفْسٍ	
तमाम जहानों पर	और डरो	उस दिन से	नही काम आएगा	कोई नफ़्स	किसी नफ़्स के	
شَيْعًا	وَلَا	يُقْبَلُ	مِنْهَا	عَدْلٌ	وَلَا	تَنْفَعُهَا
कुछ भी	और ना	कुबूल किया जाएगा	उससे	कोई बदला	और ना	नफ़ा देगी उसे
وَلَا	هُمْ	يُنْصَرُونَ ⑫⑤	وَ اِذْ	اِبْتَلٰٓى	اِبْرٰٓهٖمَ	رَبُّهُ
और ना	वो	मदद दिए जाएंगे	और जब	आज़माया	इब्राहीम को	उसके रब ने
فَاتَّسَّهْنَ ط	قَالَ	اِنِّيْ	جَاعِلُكَ	لِلنَّاسِ	اِمَامًا ط	قَالَ
तो उसने पूरा कर दिया उन्हें	फ़रमाया	बेशक मैं	बनाने वाला हूं तुझे	लोगों के लिए	इमाम	कहा
وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ط	قَالَ	لَا يَنْالُ	عَهْدِيْ	الظّٰلِمِيْنَ ⑫⑥	وَ اِذْ	
और मेरी औलाद में भी	फ़रमाया	नही पहुंचेगा	मेरा अहद	ज़ालिमों को	और जब	
جَعَلْنَا	الْبَيْتَ	مَثَابَةً	لِّلنَّاسِ	وَ اٰمَنًا ط	وَ اتَّخِذُوا	
बनाया हमने	बैतुल्लाह को	लौटने की जगह/मरकज़	लोगों के लिए	और अमन की जगह	और बना लो	

مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ	مُصَلًّى ۖ	وَعَهْدُنَا	إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ	وَإِسْمَاعِيلَ			
मक़ामे इब्राहीम को	जाए नमाज़	और हमने वसियत की	इब्राहीम को	और इस्माईल को			
أَنْ	طَهَّرَا	بَيْتِي	لِلطَّائِفِينَ	وَالْعَافِينَ	وَالرُّكَّعَ		
येकि	तुम दोनों पाक करो	मेरे घर को	तवाफ़ करने वालों के	और एतकाफ़ करने वालों	और रुकूअ करने वालों		
السُّجُودِ ۝۱۲۵	وَإِذْ	قَالَ	إِبْرَاهِيمُ	رَبِّ	اجْعَلْ	هَذَا	بَلَدًا
(और)सज्दा करने वालों के लिए	और जब	कहा	इब्राहीम ने	ऐ मेरे रब	बना दे	इस	शहर
أَمِنًا	وَأَرْزُقْ	أَهْلَهُ	مِنَ الشَّجَرَاتِ	مَنْ	أَمِنَ	مِنْهُمْ	
अमन वाला	और रिज़क़ दे	इसके रहने वालों को	फलों में से	जो	ईमान लाए	उनमें से	
بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ	قَالَ	وَمَنْ	كَفَرَ	فَأَمَّتِئْتُهُ	قَلِيلًا	
अल्लाह पर	और आखिरी दिन पर	फ़रमाया	और जिसने	कुफ़र किया	तो मैं फ़ायदा दूंगा उसे	थोड़ा सा	
ثُمَّ	أَضْطَرُّهُ	إِلَىٰ	عَذَابِ النَّارِ ۖ	وَبِئْسَ	الْبَصِيرُ ۝۱۲۶		
फिर	मैं मजबूर कर दूंगा उसे	तरफ़	अज़ाब	आग के	और कितनी बुरी है	लौटने की जगह	
وَإِذْ	يَرْفَعُ	إِبْرَاهِيمُ	الْقَوَاعِدَ	مِنَ الْبَيْتِ	وَإِسْمَاعِيلُ ۖ	رَبَّنَا	
और जब	बुलंद कर रहे थे	इब्राहीम	बुनियादें	बैतुल्लाह की	और इस्माईल	ऐ हमारे रब	
تَقَبَّلْ	مِنَّا	إِنَّكَ	أَنْتَ	السَّمِيعُ	الْعَلِيمُ ۝۱۲۷	رَبَّنَا	
तू कुबूल फ़रमा	हमसे	बेशक तू	तू ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	ऐ हमारे रब	
وَاجْعَلْنَا	مُسْلِمِينَ	لَكَ	وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا	أُمَّةً	مُّسْلِمَةً		
और बना हमें	फ़रमांबरदार	अपने लिए	और हमारी औलाद में से	एक उम्मत	फ़रमांबरदार		
لَّكَ ۖ	وَأَرِنَا	مَنَاسِكَنَا	وَتُبْ	عَلَيْنَا ۖ	إِنَّكَ	أَنْتَ	
तेरे लिए	और दिखा हमें	हमारी इबादत के मुक़ाम व तरीक़े	और महरबान हो	हम पर	बेशक तू	तू ही है	

التَّوَابُ	الرَّحِيمُ ⑫⑧	رَبَّنَا	وَابْعَثْ	فِيهِمْ	رَسُولًا
बहुत तौबा कुबूल करने वाला	निहायत रहम करने वाला	ऐ हमारे रब	और मबऊस फ़रमा	इनमें	एक रसूल को
مِنْهُمْ	يَتْلُوا	عَلَيْهِمْ	أُتِيكَ	وَيُعَلِّمُهُمُ	الْكِتَابَ
इन्हीं में से	वो तिलावत करे	उन पर	तेरी आयात	और तालीम दे उन्हें	किताब
وَالْحِكْمَةَ	وَيُزَكِّيهِمْ ط	إِنَّكَ	أَنْتَ	الْعَزِيزُ	الْحَكِيمُ ⑫⑨
और हिक्मत की	और वो तज़किया करे उनका	बेशक तू	तू ही है	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला
وَمَنْ	يَرْغَبُ	عَنْ مِلَّةٍ	إِبْرَاهِمَ	إِلَّا	مَنْ
और कौन है	जो मुंह मोड़े	तरीके से	इब्राहीम के	मगर	वो जिसने
نَفْسَهُ	وَلَقَدْ	اصْطَفَيْنَاهُ	فِي الدُّنْيَا	وَإِنَّهُ	فِي الْآخِرَةِ
अपने नफ़्स को	और अलबत्ता तहक़ीक़	चुन लिया था हमने उसे	दुनिया में	और बेशक वो	आख़िरत में
لِمَنِ الصّٰلِحِينَ ⑫⑩	إِذْ	قَالَ	لَهُ	رَبُّهُ	أَسْلِمُ ٭
अलबत्ता सालेह लोगों में से होगा	जब	कहा	उसको	उसके रब ने	फ़रमांबरदार हो जा
أَسْلَمْتُ	لِرَبِّ	الْعَالَمِينَ ⑫⑪	وَوَصَّى	بِهَا	إِبْرَاهِيمَ
मैं फ़रमांबरदार हो गया	रब का	तमाम जहानों के	और वसीयत की	उसकी	इब्राहीम ने
وَيَعْقُوبُ ط	يَبْنِي	إِنَّ	اللَّهُ	اصْطَفَى	لَكُمْ
और याक़ूब ने	ऐ मेरे बेटो	बेशक	अल्लाह ने	चुन लिया	तुम्हारे लिए
فَلَا تَمُوتُنَّ	إِلَّا	وَأَنْتُمْ	مُسْلِمُونَ ⑫⑫	أَمْ	كُنْتُمْ
पस तुम हरगिज़ ना मरना	मगर	इस हाल में कि तुम	मुसलमान हो	क्या	थे तुम
إِذْ	حَضَرَ	يَعْقُوبَ	الْمَوْتُ ٭	إِذْ	قَالَ
जब	याक़ूब को	मौत	जब	कहा उसने	अपने बेटों से
لَبِنِيهِ	مَا	تَعْبُدُونَ	تَعْبُدُونَ	مَا	تَعْبُدُونَ
अपने बेटों से	किसकी	तुम इबादत करोगे	जब	कहा उसने	अपने बेटों से

مِنْ بَعْدِي ^ط	قَالُوا	نَعْبُدُ	إِلَهَكَ	وَالله	أَبَايَكَ	إِبْرَاهِمَ
मेरे बाद	उन्होंने कहा	हम इबादत करेंगे	तेरे इलाह की	और इलाह की	तेरे आबा ओ अजदाद के	इब्राहीम
وَإِسْمَاعِيلَ	وَإِسْحَاقَ	إِلَهًا	وَاحِدًا ^ط	وَنَحْنُ	لَهُ	مُسْلِمُونَ ¹³³
और इस्माईल	और इस्हाक के	इलाह की	एक ही की	और हम	उसी के लिए	फरमांबरदार हैं
تِلْكَ	أُمَّةٌ	قَدْ	خَلَتْ	لَهَا	مَا	كَسَبَتْ
ये	एक उम्मत थी	तहकीक	गुज़र गई	उसके लिए है	जो	कमाया उसने
وَلَكُمْ	وَقَالُوا	كُونُوا	هُودًا	أَوْ	نَصْرَى	تَهْتَدُوا
और तुम्हारे लिए है	कहा और उन्होंने	हो जाओ	यहूदी	या	नस्रानी	तुम हिदायत पा लोगे
مَّا	كَسَبْتُمْ ^ج	وَلَا	تُسْأَلُونَ	عَبَا	كَانُوا	يَعْمَلُونَ ¹³⁴
जो	कमाया तुमने	और ना	तुम सवाल किए जाओगे	उसके बारे में जो	थे वो	अमल करते
مِلَّةَ	إِبْرَاهِمَ	حَنِيفًا ^ط	وَمَا	كَانَ	مِنَ الْبُشْرِكِينَ ¹³⁵	
मिल्लत	इब्राहीम की	जो यकसू था	और नहीं	था वो	मुशरिकीन में से	
قُولُوا	أَمَّا	بِالله	وَمَا	أُنْزِلَ	إِلَيْنَا	وَمَا
कहो तुम	ईमान लाए हम	अल्लाह पर	और जो	नाज़िल किया गया	हमारी तरफ़	और जो
إِلَى	إِبْرَاهِمَ	وَإِسْمَاعِيلَ	وَإِسْحَاقَ	وَيَعْقُوبَ	وَالْأَسْبَاطَ	
तरफ़	इब्राहीम के	और इस्माईल	और इस्हाक	और याकूब	और औलादे याकूब के	
وَمَا	أُوتِيَ	مُوسَى	وَعِيسَى	وَمَا	أُوتِيَ	النَّبِيُّونَ
और जो	दिए गए	मूसा	और ईसा	और जो	दिए गए	तमाम अम्बिया
لَا نُفَرِّقُ	بَيْنَ	أَحَدٍ	مِنْهُمْ	وَنَحْنُ	لَهُ	مُسْلِمُونَ ¹³⁶
नहीं हम फ़र्क करते	दर्मियान	किसी एक के	उनमें से	और हम	उसी के लिए	फरमांबरदार हैं

فَإِنْ	أَمِنُوا	بِمِثْلِ مَا	أَمَنْتُمْ	بِهِ	فَقَدْ	اهْتَدَوْا ٥	وَإِنْ
फिर अगर	वो ईमान लाएँ	उसी तरह जैसा	ईमान लाए तुम	साथ उसके	पस तहकीक	वो हिदायत पा गए	और अगर
تَوَلَّوْا	فَإِنَّمَا	هُمْ	فِي شِقَاقٍ ٦	فَسَيَكْفِيكَهُمْ	اللَّهُ ٧	وَهُوَ	
वो मुंह फेरें	तो बेशक	वो	इख़िलाफ़ में हैं	पस अनक़रीब काफ़ी होगा आपको उनसे	अल्लाह	और वो	
السَّيِّعُ	الْعَلِيمُ ١٣٧	صِبْغَةً	اللَّهُ ٨	وَمَنْ	أَحْسَنُ	مِنَ اللَّهِ	
ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	रंग	अल्लाह का	और कौन	ज़्यादा अच्छा है	अल्लाह से	
صِبْغَةً	وَنَحْنُ	لَهُ	عِبَادُونَ ١٣٨	قُلْ	اتَّحَاجُّونَنَا		
रंग में	और हम	उसी की	इबादत करने वाले हैं	कह दीजिए	क्या तुम झगड़ा करते हो हमसे		
فِي اللَّهِ	وَهُوَ	رَبُّنَا	وَرَبُّكُمْ ٩	وَلَنَا	أَعْبَالُنَا	وَلَكُمْ	
अल्लाह के बारे में	हालांकि वो	रब है हमारा	और रब है तुम्हारा	और हमारे लिए	आमाल हमारे	और तुम्हारे लिए	
أَعْبَالُكُمْ ١٠	وَنَحْنُ	لَهُ	مُخْلِصُونَ ١٣٩	أَمْ	تَقُولُونَ		
आमाल तुम्हारे	और हम	उसी के लिए	मुख़लिस हैं	या	तुम कहते हो		
إِنَّ	إِبْرَاهِمَ	وَإِسْمَاعِيلَ	وَإِسْحَاقَ	وَيَعْقُوبَ	وَالْأَسْبَاطَ		
बेशक	इब्राहीम	और इस्माईल	और इस्हाक़	और याक़ूब	और औलादे याक़ूब		
كَانُوا	هُودًا	أَوْ	نَصْرَى ١١	قُلْ	ءَأَنْتُمْ	أَعْلَمُ	أَمْ
थे	यहूदी	या	नसरानी	कह दीजिए	क्या तुम	ज़्यादा जानते हो	या
وَمَنْ	أَظْلَمُ	مِمَّنْ	كُتِمَ	شَهَادَةً	عِنْدَهُ	مِنَ اللَّهِ ١٢	
और कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जिसने	छुपाई	गवाही को	जो उसके पास है	अल्लाह की तरफ़ से	
وَمَا	اللَّهُ	بِغَافِلٍ	عَمَّا	تَعْمَلُونَ ١٤٠	تِلْكَ	أُمَّةٌ	
और नहीं	अल्लाह	गाफ़िल	उससे जो	तुम अमल करते हो	ये	एक उम्मत थी	

قَدْ	خَلَتْ ^ج	لَهَا	مَا	كَسَبَتْ	وَلَكُمْ	مَا	كَسَبْتُمْ ^ج
तहकीक	गुज़र गई	उसके लिए है	जो	कमाया उसने	और तुम्हारे लिए है	जो	कमाया तुमने
وَلَا	تُسْأَلُونَ	عَبَّا	كَانُوا	يَعْمَلُونَ ^ع			
और ना	तुम सवाल किए जाओगे	उसके बारे में जो	थे वो	अमल करते			